श्री निष्कलंकी नारायण जनार्दनाय

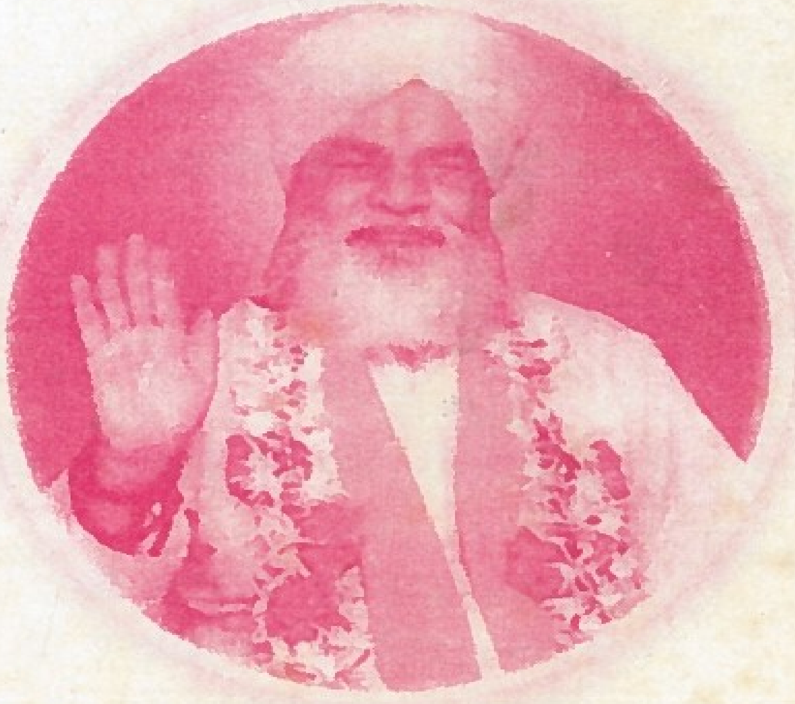
# सतपंथ सनातन धर्मः



सतपंथ प्रकाशन समिति, प्रेरणापीठ, पीराणा

श्री निष्कलंकी नारायण जनार्दनाय

# सतपंथ सनातन धर्मः



सतपंथ प्रकाशन समिती, प्रेरणापीठ, पीराणा

# भक्तजनो प्रति दो शब्द

वर्तमानकाल में सामान्यत: मानव जीवन ज्यादा प्रवृत्तिमय हो गया है। सांसारिक कठिनाइयाँ भी बढ गई है। अेसी परिस्थिती में प्रभु का स्मरण करना और धर्म कार्यमें मन लगाना अति आवश्यक है।

किसी भी स्थितिमें इश्वर को भुलना नही चाहिये। इश्वर प्राप्ति का मुख्य साधन है, भजन, किर्तन, नामस्मरण और जप-तप।

सतपंथ संप्रदायमें सद्‌गुरु श्रीइमामशाह महाराजने मानव कल्याणके लिये जप-पूजा और नाम-स्मरण का ज्यादा महत्त्व दिया है।

परिवारमें छोटेसे लेकर बडे तक, सभी के लिये सुविधापूर्ण प्रार्थना पाठ एवं पूजा के मंत्र आदि, यह छोटीसी पुस्तिकामें प्रस्तुत किया है। जो सभी भक्तजनों को उपयोगी बनेगा। अंत: सद्‌गरुजी की सौ शिक्षा याने उपदेश का पालन करने से जीवन सुखमय बनेगा।

आचार्य श्रीकरशनदासजी महाराज
पीठाधिकारी सतपंथ धर्म प्रेरणापीठ
पीराणा

श्री निष्कलंकी नारायण जनार्दनाय

# सनातन धर्मः सतपंथ



## पवित्रता और शुध्दाचरण का आदेश देनेवाला

## -: सतपंथ संप्रदाय :-

-: प्रकाशक :-

**सत्पंथ प्रकाशन समिति, प्रेरणापीठ, पीराणा.**

और

**श्री सत्पंथ साहित्य प्रकाशन**

श्री सत्पंथी मंदीर, फैजपूर ४२५५०३

ता. यावल, जि. जळगाव ( महाराष्ट्र )

फोन नं. ( ०२५८५ ) ४५४१७

'ध्यान मूलं गुरोमूर्तिः पूजा मूलं गुरोः पद्म।
मंत्र मूलं गुरोर्वाक्यं मोक्ष मूलं गुरोः कृपा।

卐

भारत देश धर्म परायण देश है। यहाँ हिन्दु धर्म के सनातन मार्ग पर चलने वाले अनेक संप्रदाय हैं। अैसे संप्रदायो में अेक है सतपंथ संप्रदाय।

यह संप्रदाय अेक विशिष्ट प्रकार का संप्रदाय है। जिसके मूल तत्त्वका आधार और आरंभ सनातनमार्ग से हुआ है। इस लिये हिन्दु संस्कृति की सात्त्विक विचार धारा से संलग्न, तत्त्वज्ञान का भरपूर खजाना इस धर्म में है। इस लिये सतपंथ धर्म के सिध्दांत और आदर्श का प्रतिपालन ही मोक्ष मार्ग का उत्तम साधन माना गया है।

यह पवित्र संप्रदाय के श्री इमामशाह महाराज अेक सुफी संत धर्मात्मा थे। वह शुध्द ब्रह्मतत्त्व और आदि सनातन हिन्दु धर्म के प्रखर अभ्यासी और हिमायती थे। उन्होंने जीवन पर्यंत हिन्दु धर्म का शुध्दाचरण प्रेरित सतपंथ का मार्गदर्शन किया है।

इस हर समय कहते थे कि,

"सनातन सतपंथ धर्म युगधर्म है। और इस धर्म का आचरण करनेवाला सच्चा सतपंथी है।"

इस ज्ञानी और योगी धर्मात्मा ने मानव कल्याण का मुख्य साधन शुध्दाचरण और सात्त्विकता है, ऐसा दृढतापूर्वक कहकर प्रत्येक मनुष्य को अपनी दिन चर्या में विधिवत पालन करने का आदेश दिया है।

विशेषत: सर्वधर्म समभाव और सहिष्णुता युक्त आदरभाव का पालन करने का उपदेश देकर जगत के सभी संत, महंत, साधु ऋषिमुनियों को बडा आदर दिया है। उनकी दृष्टि से सभी धर्म और संप्रदाय मानवमात्र को सत्य के मार्ग पर ले जाने वाले हैं। अैसे भी सामान्य मनुष्य, धर्म की सच्ची भावना, भजन, पूजा, जप-तप सेवा भाव, संत समागम और व्रत द्वारा प्राप्त कर सके यह उदेश्य से श्री इमामशाह महाराजने घटपाट पूजन का आदेश देकर सरल साधन प्रदान किया है।

दान धर्म का महत्त्व और महिमा प्रदर्शित करते हुए उन्होने कहा है, कि मानव मात्र को अपनी निजी कमाई का दसवाँ या बीसवाँ हिस्सा देवमंदिर या सुपात्र स्थान में दान के रुप में अर्पण करना चाहिये।

शुध्दाचरण का पवित्र मार्ग दिखाते हुए सतपंथ के श्री ईमामशाह महाराज ने उत्तम और उच्च कोटि के तत्त्वज्ञान से परिपूर्ण ज्ञानपद साहित्य का निर्माण किया है। जिसमें संतवाणी, योगवाणी, गुरुवाणी, आगमवाणी, शिक्षापत्री और अमृतवाणी जैसे ग्रंथ, प्रथम श्रेणी के माने जाते हैं। यह सभी ग्रंथ निर्माण का मूलाधार अथर्ववेद है। जिसके फल स्वरूप उन्होंने "मुलबंध" जैसे अद्बितिय हस्त लिखित महाग्रंथ में समस्त ब्रह्मांड के देवी देवताओं की उपासना हेतु मंत्रपूजा, आदि, मानवो के जीवन-मृत्युकी उध्दारक संस्कार विधि प्रस्तुत की है। पींडदान द्वारा मृतात्मा को शांति और मोक्ष देनेवाली उटासण की सात्त्विक क्रिया का निर्देश किया है। इसके अतिरिक्त जन्ममरण कीं शास्त्रोक्त क्रियाओं का सूतक-प्रायश्चित

और देह-मन शुध्दियों की आंतरबाहय़ प्रक्रिया प्रदर्शित करनेवाली मंत्र विधि भी दिखाई है। और सारा ब्रह्मांड सर्जनहार निरंजन निराकार आद्य नारायण से देव और "ॐ" प्रणव मंत्र का अध्यनन और ब्रह्मा, विष्णु, महेश और शक्ति माता की ज्योत का पूजन करना यह इस संप्रदाय की महत्त्वपूर्ण प्रणालिका है।

वेद-उपनिषद और पुराण जैसे धर्मग्रंथो का अध्ययन द्वारा इन युग पुरुष ने भगवतगीता, भागवत, रामायण और महाभारत जैसे धर्मग्रंथो को पवित्र माने हैं। और दशावतार का वास्तविक महत्त्व दिखाकर, इश्वर प्रेरित युगधर्म के अवतार कार्य की अर्थपूर्ण समीक्षा करके, दशवाँ अवतार श्री निष्कलंकी नारायण भगवान की पूजा-उपासना करने की प्रेरणा दी है। इसके फलस्वरूप सतपंथ संप्रदाय में श्री निष्कलंकि नारायण को आराध्य देव मानकर स्थापित करने का आदेश दिया है।

व्रत-त्यौहार एवं तीथि-त्यौहारों को उत्सव के रुपमें मनाने के लिये गुरुवार, चंद्रदर्शन, गुडी पाडवा, गुरुपुर्णिमा, राम नवमी, जन्माष्टमी,

दशहरा, दिपावली या अेकादशी को अग्रस्थान दिया है।

इससे अतिरिक्त आत्मशुध्दि का आधार शरीर शुध्दि है, ऐसी हेतुलक्ष्मी बात समझाते हुअे श्री इमामशाह महाराजने मादक पदार्थ का सेवन विष समान है ऐसा कहकर निषेध बताया है। और अहिंसा, प्रेम, सद्भाव, दया; सेवा एवं विनय-विवेक जैसे सद्गुणो का प्रतिक्षण पालन करने का परम कर्तव्य माना है।

ऐसे अनादी कालसे प्रचलित पवित्र सतपंथ धर्म को वर्तमान परिस्थिति की वास्तविक समीक्षा करते हुअे प्रवर्तक तत्त्व चिंतकों और धर्माचार्यो के मतानुसार सतपंथ संप्रदाय, हिंदु सनातन धर्म प्रेरित पंथ है। यह पवित्र धर्म मार्ग को मानने वाले अनुयायीओं की संख्या आठ लाख से भी कहीं अधिक है। जिस में हिन्दु जाति के कुणबी, राजपूत, लेउवा-कडवा पाटीदार, मराठे, गुर्जर, भावसार, साली, माली, कोली, सुतार, भोइ, मछियारे, राणा, गौचरी, पंसारी, आदीवासी, ठाकुर ब्रारैया और यादव जैसे अनेक जातिउपजाति के लोगों का समावष्टि होता

है। जो गुजरात, कच्छ, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश राजस्थान और अन्य प्रदेशो के निवासी है।

विद्यमान परिस्थिति में यह संप्रदाय के ६०० से भी अधिक मंदिर एवं पूजास्थान है। जहाँ नियमित रुप से पूजा-अर्चना, आरति भजन, सत्संग प्रतिदिन प्रात: संध्या होते रहते है।

ऐसे पवित्र सतपंथ संप्रदाय का प्रमुख धर्मस्थान, गुजरात प्रदेश के अहमदाबाद के नजदीक सतपंथ प्रेरणापीठ पीराणा नामक गाँव में स्थित है। जहाँ श्री इमामशाह महाराज का भव्य और पवित्र समाधि स्थान है। जो सतपंथ संप्रदाय की गुरुगादी भी मानी जाती है।

कहा जाता है कि यह सुंदर मनभावन स्थापत्य का निर्माण सद्गुरुजी ने अपने जीवन के अंतिम वर्षो में अपने निजी मार्गदर्शन से करवाया था। सामान्यत ६०० वर्ष पूर्व निर्माण किया गया यह सुंदर धर्मस्थान का महत्त्व अलौकिक है। जो अन्य धर्म स्थानोंकी तुलना में अलिप्त प्रतिभा प्रस्तुत करता है। उसके

प्रवेशद्वार की रचना वैदिक परंपरानुसार की गई है। भक्तजनों को शांति से एक चित्त होकर पूजा-अर्चना करने के लिये यहां विशाल प्रांगण की सुविधा है। समाधि स्थान के आसपास का पवित्र वातावरण मन अंतर को हृदयगंम हैं और भाव विभोर बना देता है। यहां पूज्य इमामशाह महाराज के समय से ही प्रज्वलित शुध्द घी की अखंड दिव्य ज्योत के दर्शन से भक्तजन धन्यता का अनुभव करते है। समाधि के पास पुरातन काल से रखी गई पवित्र चरणपादुका को प्रति वर्ष गुरुपूर्णिमा के अवसर पर पंचामृत से प्रक्षालन करके उसका विशेष पूजन होता है।

इस युग पुरुष ने अपने स्वयं मार्गदर्शन से निर्माण किये हुए। पवित्र स्थान के स्थापत्य का दीर्घ दृष्टि से निरीक्षण करने से एक अद्वितिय और विशिष्ट प्रकार का सर्जन दृष्टिगोचर होता है। ऐसी रचना अवरणिय है।

मुख्य शिखर के आसपास उत्तर-दक्षिण पूर्व पश्चिम दिशाए और अग्नि, नैऋत्य, वायव्य और इशान कोनो में नयन रम्य सुवर्ण जडित

कलश देदिप्यमान दृष्टिगोचर होते है। इस प्रकार यह समाधि स्थान के नौव शिखरे है। जिसमें वास्तुकला जैसी वैदिक परंपरा को लक्ष में रखकर देवी देवताओं का पूजन और उनकी कृपा दृष्टि का अस्तित्त्व यहां अग्रस्थान पर है।

पारंपारिक रीति से इस धर्म स्थान की गणना पात्र जीवंत और प्रत्यक्ष विशिष्टताएँ ईस संप्रदाय के योग पुरुष की योग साधना का सचोट प्रमाण देते हुए कुछ साधन यहां विद्यमान हैं।

समाधि स्थान के विशाल आरसपहाण जडित प्रांगण में अेक अैसा आरस-पथ्थर है, कि जिस पर बैठ कर सद्‌गुरुजी लोगों को बोध-उपदेश देते थे। इस पत्थर की विशिष्टता यह है कि मध्यांन दोपहर के उग्र तापमान से सभी आरस पत्थर अधिक गरम हो जाते है। परंतु यह अेक अेसा पत्थर है कि जो असह्य गरमी में भी ठंडा-शितल रहता है। सचमुच यह अेक अद्‌भुत और उल्लेखनीय बात है।

यहाँ प्रांगण में १०८ फुट ऊँचा ध्वज स्थंभ है। जिसके अग्रभाग पर ॐ अंकित श्वेत ध्वज लहराता है। जो शांति का प्रतीक माना जाता है। कहा जाता है कि, यह ध्वज-स्तंभ श्री इमामशाह महाराज ने अपने शिष्यों के साथ खडा करके स्थापित किया था। जो आज भी वही स्थान पर स्थित है।

आज यह पवित्र धाम का बहुलक्षी विकास हो रहा है। वर्ष के प्रत्येक दिन यहाँ अनुयायी और भाविक दर्शनार्थी बडी भारी संख्या में आते रहते है।

सतपंथीओं के लिये यहाँ निशुल्क भोजन की व्यवस्था सद्गुरु श्री इमामशाह महाराज के अर्से से है। यहां एक गौशाला है। जिसमे गौ पालन होता है। विशेषत: इस पवित्र स्थान की व्यवस्था ट्रस्ट कमिटी द्वारा चलाई जाती है। ट्रस्ट के अध्यक्ष महोदय ही धर्म के आचार्य एवं पिठाधिकारी रहते हैं। जो इस संस्था की संपूर्ण व्यवस्था और धार्मिक गतिविधियों प्रति कार्यभार संभालते है।

इस संस्था और संप्रदाय के वर्तमान पिठाधिकारी आचार्य श्री करसनदासजी महाराज है। पिठाधिकारी का सभी अनुयायी और भाविक पूजनीय भावसे सम्मान करते हैं।

हिन्दू सनातन धर्म की भारतीय संस्कृति को गौरवशाली बनानेवाले लोग उत्सव और मेले इस पवित्र स्थान की निराली प्रतिभा है। चैत्र सुद-दूज का संघमेला यहां का सर्वोत्तम उत्सव है। कच्छ और गुजरात के दूर दूर स्थानों से भाविक भक्त इस उत्सव में बडी मात्रा में पैदल चलकर आते है। प्रतिवर्ष हजारों की संख्या में उपस्थित होकर उत्सव मनाते हैं। ईसके अतिरिक्त सद्गुरुजी का महोत्सव, चंदनविधि उत्सव, जन्माष्टमी, धरोअष्टमी, गुरुपूर्णिमा आदि उत्सव होते हैं।

यहां हररोज शाम को घटपाट-वारि पूजन विधि होती है। जिसका पवित्र अन्नकूट प्रसाद और चरणामृत प्रेमपूर्वक ग्रहण करके भक्तजन कृतार्थ होते हैं।

यहां के समाधि मंदिर के पास एक विशाल पूजा मंदिर में पुरातन काल का

श्री निष्कलंकी नारायण भगवान का निज पूजा स्थान है। जो सद्गुरु श्री इमामशाह महाराज के समय से ही यहां स्थित है। कहा जाता है कि श्री इमामशाह महाराज इसी स्थान के पास बैठकर भाविक भक्तजनों को धर्मोपदेश देते थे। यहां पुरातन काल से रखे हुए सद्गुरुजी का मुकुट और चरण पादुका हैं। जिसका हर दिन पूजन होता है। यहां श्री इमामशाह महाराज के समय का हस्तलिखित मुलबंध ग्रंथ आज भी मौजुद है। विशेषत: कलियुग के अंत में भगवान श्री निष्कलंकी नारायण का प्रागट्य होगा। और यह स्थान पर अवश्य आयेंगे। इस भावना से कई श्रध्दालु प्रतीक्षा करते हैं।

यहां श्री इमामशाह महाराज के समाधि स्थान के पास एक अद्भूत प्रणालिका पुरातन काल से प्रचलित है। कई श्रध्दालु लोग अपनी मनोकामना एवं शारीरिक-मानसिक दु:खों के निवारण के लिए बेडी पहनते हैं। बेडी लोहे की छोटी सलाखों की बनी है। जो हितार्थी को दोनों पांव में पहनाई जाती है। और आगे चलने के बाद जब साहजिकता से खुल

जाती है, तो ऐसा माना जाता है कि उसके कष्ट का निवारण होगा या पूछे हुए प्रश्न की सफलता होगी। ऐसी अद्‌भूत एवं दैवी परंपरा से सभी लोग आश्चर्य का अनुभव करते है। और श्रध्दा से नमन करते है।

इसी प्रकार भारतीय सनातन मार्ग की धार्मिक परंपरानुसार सांप्रदायिक गतिविधि का आचरण यहां पूर्ण श्रध्दा से होता है। और सतपंथ अनुयायी के लिये पूजा-अर्चना के लिये संपूर्ण सुविधा है। और यहां आनेवाले अनुयायीओं के लिये भोजन और ठहरने की स्वच्छ और सुंदर सुविधा युक्त विशाल अद्यतन अतिथि गृह है।

विशेषत: इसी संप्रदाय के अन्य धर्मस्थान गुजरात में खेडा जिले में स्थित दो गांव जिसमें देवा में भाभाराम, रूण में कीकीबाई का सुप्रसिध्द यात्राधाम है और बडौदा जिल्ले के कुकस गांव में नायाकाका का भव्य मंदिर विद्यमान हैं। और साबरकांठा जिल्ले के वडाली कस्बे में संत श्री नथुराम आश्रम इलाके का सुप्रसिध्द यात्राधाम है। इसके अतिरिक्त कच्छ

जिले में नखत्राणा के पास मोटा कादिया मे श्री अथर्ववेदी सतपंथ सेवाश्रम और दशरडी गांव में श्री कुंवरमा सतपंथी सेवाश्रम नामक स्थान भी है। जहां प्रतिदिन सेवा-पूजा और अन्नक्षेत्र चलते रहते है।

इसी प्रकार महाराष्ट्र के खानदेश विभाग के फैजपुर गांव में भी करीब ४०० वर्ष पुराना सतपंथी मंदिर विद्यमान है। जो इसी संप्रदाय का, खानदेश विभाग का पवित्र धर्मस्थान माना जाता है। यहाँ भी परंपरागत आचार्य पीठाधिकारी होते है। जो धार्मिक रीति सें सबके वंदनीय होते हैं

आज वर्तमान परिस्थितियों में संसार का मानवी धार्मिक रीति से संक्रात्मक मानसिक चिंताओं का सामना कर रहा है। तब सतपंथ जैसा पवित्र संप्रदाय अेकता, प्रेम और सनातन हिन्दु धर्म की तत्त्वशील प्रणालिकाओं से परिपूर्ण सतपंथ संप्रदाय के युग पुरुष महात्मा श्री इमामशाह महाराज की जीवनी भी इतनी ही शुध्द और कल्याणकारी है। जो सनातन भक्ति मार्ग को हमे झिमिलाती रखेगी।

# सतपंथ का स्वरूप

**( १ ) दृढ निश्चय ( २ ) प्रतिज्ञा ( ३ )नियम**

--००--

## ( १ ) दृढ निश्चय -

सत्य, पुरुषार्थ, प्रेम, समानभाव, अहिंसा, परोपकार, क्षमा.

यह सभी तत्त्वों का दृढतापूर्वक पालन करें।

## ( अ ) सत्य :

वाणी और आचरणमें हर हमेशा सत्य निष्कपट वृत्ति और मृदुभाषी बने।

## ( आ ) पुरुषार्थ : धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष।

### धर्म :

वेदोक्त मार्ग का यथाशक्ति आचरण करें।

### अर्थ :

स्वाश्रय और प्रामाणिकता से धनोपार्जन करें। यह सात्त्विक संपत्ति है। अन्याय, जुल्म और अन्य बुरे कार्य से प्राप्त कि हुयी संपत्ति का उपभोग करनेवाला व्यक्ति हीन होता है।

इसलिये न्याय और नीति से धन प्राप्त करना चाहिये।

**काम :**

विषय वासना और क्षणिक उपभोगमें प्रवृत्त न रहे। वासनाओं पर संयम रखें। इन्द्रियों को काबूमें रखें

**मोक्ष :**

वेदोक्त मुक्ति मार्ग की साधनानुसार आचरण करके, मुक्ति का अंतिम ध्येय प्राप्त करने में प्रयत्नशील रहें।

ऐसा व्यवहार करने से ही मानव जन्म की सार्थकता होगी। अन्यथा मानवी और पशुमें कोइ अंतर ही न रहेगा।

**( इ ) प्रेम :**

यह संसार में मानव मात्र समान है। इसलिये हरेकके साथ मन, वचन और कर्म से विनम्र होकर प्रेम-स्नेह से व्यवहार करना चाहिये। प्रेमसे करुणा जागृत होती है। और करूणा ही दया का पर्यायी भाव है। जो धर्म का मूल तत्त्व भी है।

## ( उ ) समानभाव :

मानवमात्रके अंतर मे अेक ही आत्मा है। अैसा आत्मौपम्य भाव रखना चाहिये। हम सब अेक ही इश्वरके संतान है। कोई छोटा नही, कोइ बडा नहीं। अैसी विशाल दृष्टि रखकर सबके साथ बंधुत्त्व भावसे रहना चाहिये।

## ( ऊ ) अहिंसा :

सत्पंथ मार्ग में अहिंसा अेक महान तत्त्व है। पशु-पक्षी और अन्य प्राणीको मारने से हिंसा होती है। इतना ही नहीं, 'मार' कहने से या किसीकी भावनाओं का खंडन करने पर भी हिंसा होती है और नैतिक अध:पतन होता है।

## ( ए ) परोपकार :

सन्मार्ग पर चलनेवाले प्रत्येक व्यक्ति को सहाय करने के लिये हमेशा तत्पर रहना चाहिये। शुध्द भावना और निष्काम वृत्ति से दु:खी जनोकी सेवा करना और मानव कल्याण की भावना रखनी चाहिये। सत्पुरुषो की सेवा करना अपना परम कर्तव्य समझना।

## ( ऐ ) क्षमा :

'क्षमा वीरस्य भुषणम्:' यह उक्ति स्मरण में रखते हुये शत्रु हो या कष्ट पीडा पहुचाने वालेको भी क्षमा करना शुभ लक्षण है।

## ( २ ) प्रतिज्ञा :-

( अ ) सतपंथ में निर्देश की गइ सभी प्रतिज्ञा का अक्षरश: पालन करना। सद्गुरु श्री इमामशाहने व्यवहार में कर्तव्यपालन और धर्म कार्यमें कैसा आचरण रखना चाहिये, इस संबंधमे जो नियम-पालन का निर्देश किया है, उसका अनुसरण करना।

( आ ) बालकों को सतपंथ की शिकवण एवं उपदेश से ज्ञात रखकर अपने संतानो को धर्म का शिक्षण देना अति आवश्यक है। जिससे धार्मिक संस्कृति संरक्षित रहेगी।

( इ ) धार्मिक बातोमें चमत्कार या अंधश्रध्दा को दूर करके ज्ञान दृष्टि का ही अवलंबन करना चाहिये। जिससे अज्ञानताका भय दूर होगा। वेद, उपनिषदो, सत्‌शास्त्रो और गुरुवचन पर दृढश्रध्दा एवं विश्वास रखना परम कर्तव्य है।

## ३) नियम :

( अ ) शरीरशुध्दि ( आ ) अंतरशुध्दि ( इ ) व्रत ( ई ) उपासना ( उ ) ध्येय

### ( अ ) शरीरशुध्दि :

लाइ सुतक याने स्पर्शा-स्पर्श ( वृध्दिजनन शौच ) स्त्रीकोप्रसूता होनेके बाद सवामास याने ४० दिन और गोत्र जनोको ११ दिन तक सूतक याने स्पर्शा-स्पर्श का पालन करना चाहिये। मृत्यु-सूतक गोत्रजनो को ११ दिन तक रखना चाहिए। रजस्वला ४ दिन तक किसी भी चीज का स्पर्श न करें।

स्नान शौचादि विषय में शास्त्रानुसार आचरण करें। सद्‌गुरु वचनानुसार तीर्थ मंत्रोपचारादि से शुध्द बने।

### ( आ ) अंतर शुध्दि :

मादक एवं नशीले पदार्थ याने लहसुण, प्याज, हिंग, तम्बाकु, अफीण, भांग, गांजा, ताडी; मास-मदिरा जैसी निषेध चीजोंका सेवन न करें। क्योंकि अैसे पदार्थो का सेवन करने से शरीर को हानी पहूंचती है। प्रभु भजन करनेसे परावृत्त हो सकते है।

सुद, सवाई सुद और परस्त्री गमन-चिंतन से भी मनुष्य में हीनता आती है, आत्मा की शक्ति लुप्त हो जाती है। और आसुरी वृत्ति बढती है। यह महापाप से मनुष्य का अध:पतन होता है। इस लिये शास्त्रोमें निषेध माने गये पदार्थो का त्याग करके, सात्त्विक अन्न और पदार्थो का सेवन करें इसके एक स्वरुप आत्मा-एवं हृदय की शुध्दि होती है। मन-अंतर प्रभु स्मरणमें तल्लीन रहता है। और दैवी संपत्ति का आविर्भाव होता है।

## ( इ ) व्रत :

युगधर्मानुसार प्रत्येक मासकी शुक्ल द्वितीया और शुक्रवार के दिन जो दुज आती है, जिसको थावर बीज का महाव्रत कहते है, उस दिन व्रत रखें।

दशवंत, सुक्रित, पुण्यतिथी, श्राध्द, उत्तरकार्य, पिंडश्राध्द आदि सतपंथ की पूजाविधि अनुसार करें।

महाशिवरात्री, रामनवमी, गोकुलाष्टमी, गुरुपूर्णिमा, दुर्गापूजा (नवरात्री) गणेशचतुर्थी, दिपावली, अेकादशी, चौदस, अमावास्या आदि तिथि-त्यौहारों का व्रत रखें।

## ई) उपासना :

प्रतिदिन चार संध्या अवश्य करें।

(१) प्रात: सूर्योदयसे पहले,
(२) मध्यान्ह बारह बजे,
(३) सूर्यास्त समय,
(४) मध्यरात्री.

ॐ प्रणव मंत्र का ध्यान-चिंतन, करना और सतपंथ के वचनानुसार वरूणदेव, वारियज्ञ घटपाट पूजा करें।

## (उ) ध्येय :

कलियुगके अंतमे प्रगट होने वाले दशमा अवतार आद्य विष्णु श्रीनिष्कलंकी नारायण और आद्यशक्ति माता और प्रणव मंत्र "ॐ" आराध्य देव मानना।

# सतपंथ नित्य प्रार्थना पाठ

## : कर दर्शनम् :

कराग्रे वसते लक्ष्मी: करमूले सरस्वती।
करमध्ये तु गोविंद: प्रभाते करदर्शनम्॥

★

हस्तके अग्र भागमें लक्ष्मी का निवास है। हस्तके मध्य भागमें प्रभु गोविंद, हस्तके मूल देवी सरस्वती का वास है। जिसका प्रातः समय दर्शन करना चाहिये।

★

## : पृथ्वी ( वसुधा ) वंदन :

समुद्र वसते देवि। पर्वतस्तन मण्डले।
विष्णुपत्नि। नमस्तुभ्यं पादस्पर्श क्षमस्व में।

★

समुद्र रुपी वस्त्र धारण करनेवाली, पर्वत रुपी स्तनवाली, हे विष्णु पत्नि! हे मा वसुधा, मै तुझे प्रणाम करता हूँ। आपको मेरे पाँव का स्पर्श होता है, इसलिये मुझे क्षमा करें।

★

## : गुरु वंदना :

गुरु ब्रह्मा, गुरु विष्णुः गुरु देवो महेश्वरः।
गुरु साक्षात् परब्रह्म, तस्मै श्रीगुरवे नमः।।

★

ध्यान मूलम् गुरुमूर्ति, पूजा मूलम् गुरु पदम्।
मंत्र मूलम् गुरुः वाक्य, मोक्ष मूलम् गुरु कृपा।।

ब्रह्मानन्दं परम सुखदं केवलं ज्ञानमूर्तिम्।
द्वन्द्वातीतं गगनसदृश तत्त्वमस्यादि लक्षम्
एकं नित्यं विमलमचलं सर्वधी साक्षीभूतं।
भावातीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरुं तं नमामि।।

★

ॐ

## : श्री विष्णु स्तुति :

शान्ताकारं भुजगशयनम्, पद्मनामं सुरेशम्
विश्वाधारम् गगनसदृश्म, मेघवर्णम् सुभांगम्।
लक्ष्मीकान्तम् कमलनयनम्, योगिगभिर्ध्यान गम्यम्।
वंदे विष्णु भवभय हरम्, सर्व लोकैक नाथम्।।

★

## : श्री नारायण स्तुति :

नारायणं निराकारं नरवीरं नरोत्तमम्।
नृसिंह नागनाथं च, तं वंदे नरकांतकम्।।

निराकार, शूरवीर, नरोत्तम, नृसिंह भगवान, कालिय नागको नाथने वाले और नरक का अंत लानेवाले नारायण प्रभु को मैं नमस्कार करता हूँ।

★

## ( उगते ) प्रातः सूर्य नारायण का मंत्र

ॐ परमकृपालु परमात्माकी कृपासे प्रारंभ करता हूं। ॐ नमो श्री सद्गुरु पात्र ब्रह्मा इन्द्र इमामशाह आद्य-विष्णु निरंजन निष्कलंकी नारायण आपकी आशिषसे....

उगता सूरज, अस्ताचल भाण।। नरबीज वह श्री निष्कलंकी नारायण।। आप सत्य के प्रेरक-धारक रक्षणहार। पढते गोरगायत्री जप-तपसे बिंव उपाया। तब हे! सुर्यदेव आपके चरणमें हम आयें। स्वामी! आप निरंजन निराकार। धर्म कारण लिया अवतार। इतनी जो प्रार्थना करें वह नरक में न जाय।

सद्गुरु इमामशाह, ॐ श्री निष्कलंकी नारायण को नमो नमः

★

## दिया ज्योतिको नमस्कार करने का मंत्र

ॐ परमकृपालु परमात्माकी कृपासे प्रारंभ करता हूं। ॐ नमो श्री सद्गुरु पात्र ब्रह्मा इन्द्र इमामशाह आद्य-विष्णु निरंजन निष्कलंकी नारायण आपकी आशिष से.....

गुरु दिया, गुरु देवता, गुरु बिना घोर अंधेरा। गुरु बिना युक्ति नहीं गुरु बिना मुक्ति नही। मन ताला, गुरु मंत्र चाबी, खोलदो धर्म द्वार। देखो नारायण का रूप। तरें भवसागर पार। जले ज्योत भागे छूत।

सद्‌गुरु इमामशाह, ॐ श्री निष्कलंकी नारायण को नमो नम:

★

## धूप करनेका मंत्र

ॐ परम कृपालु परमात्माकी कृपासे प्रारंभ करता हूँ। ॐ नमो: श्री सद्‌गुरु पात्र ब्रह्मा इन्द्र इमामशाह आद्यविष्णु निरंजन निष्कलंकी नारायण आपकी आशिषसे....

धूप जले, अगर जले, भव का कष्ट टले। देव जागे, दैत्य भागे। जहाँ धूप, वहाँ रुप, जहाँ देव वहाँ पूजा। अलख निरंजन निराकार हमारा देव नहीं दूजा....।

सद्‌गुरु इमामशाह...ॐ श्री निष्कलंकी नारायण को नमो नम:

★

# सर्व देव ऋषिवरको नमस्कार करने का मंत्र

ॐ परम कृपालु परमात्माकी कृपासे प्रारंभ करता हूं। ॐ नमो श्री सद्गुरु ब्रह्मा इन्द्र इमामशाह आद्य-विष्णु निरंजन निष्कलंकी नारायण आपकी आशिष से...

आद्य नारायण को नमस्कार। ब्रह्मा, विष्णू, महेश को नमस्कार, आद्य शक्ति को नमस्कार। श्री निष्कलंकी नारायण को नमस्कार। प्रथम पुरुष को नमस्कार। हरिवंशकुलके समग्र परिवारको नमस्कार। धरती-आसमानको नमस्कार। पवन-पाणीको नमस्कार। चंद्र-सूर्यको नमस्कार। नवलाख ताराओं को नमस्कार। बारह मेघ को नमस्कार नवकुल नाग को नमस्कार। सात समुद्र को नमस्कार। नौसो नव्वाणु नदियों को नमस्कार। ग्यारह रुद्र को नमस्कार। बारह आदित्य को नमस्कार। आठ वसु को नमस्कार। अश्विनीकुमार को नमस्कार। उन्यास मरुतों को नमस्कार। चौदह ब्रह्मांडो को नमस्कार। नवग्रह को नमस्कार। सात वार, सत्ताइस नक्षत्रों को नमस्कार। पंद्रहतिथि, बारह करणों को नमस्कार।

नवग्रह को नमस्कार। सप्त द्विप को नमस्कार। नवखंड पृथ्वी को नमस्कार। चौबीस मुल्क को नमस्कार। अष्टकुल पर्वतों को नमस्कार। अढारह भार वनस्पति को नमस्कार। चार वेदो को नमस्कार। चार खाण चार वाण को नमस्कार। अग्नि, तेज, अन्नदेवको नमस्कार। आदि अंत और मध्यान्ह देवों को नमस्कार। उत्तर, दक्षिण, पूरब, पश्चिमको नमस्कार। दश दिग्पाल को नमस्कार। दशे दिशाओं को नमस्कार। नवनाथ चोर्यासी सिध्द को नमस्कार। चौसठ जोगणीओं को नमस्कार। इठयांसी सहस्त्र ऋषियोंकों नमस्कार। अेक लाख अस्सी हजार संत महात्माओंको नमस्कार। अढसठ तीर्थो को नमस्कार। नन्यानवे कोटि झांखा को नमस्कार। छप्पन कोटि मेघा को नमस्कार। बत्तीस कोटि किन्नरों को नमस्कार। पाँच कोटि प्रहलादको नमस्कार। सात कोटि हरिशचंद्र को नमस्कार। नव कोटि युधिष्ठिर को नमस्कार। बार कोटि कमला कुंवर को नमस्कार। तेत्तीस कोटि देवो को नमस्कार। सर्व ऋषिवर गतगंगाको नमस्कार। दश अवतारोंकों नमस्कार। मुखी सेवक को नमस्कार। चौद भुवन के देव-ऋषिवर को नमस्कार। करण कल्पके अनंतकोटि देवों को नमस्कार।

स्वामी! हमारे अपराधों को क्षमा करो। सतपंथके मार्गमें रखों। चौर्यासी के फेरे मिटाओ। तेतीसकोटि के मिलाप प्रदान करों। जंबुद्वीप के पति।।

सद्गुरु इमामशाह...ॐ श्रीनिष्कलंकी नारायण को नमो नम:

★

## अक्षयपात्र थाल का मंत्र

ॐ परम कृपालु परमात्माकी कृपा से प्रारंभ करता हूँ।

ॐ नमो श्री सद्गुरु पात्र ब्रह्मा इन्द्र इमामशाह आद्यविष्णु निरंजन निष्कलंकी नारायण आपकी आशिष से....

हरिश्चंद्र, चतुरवेदी ब्रह्मा, मोक्षदातार देव महेश्वर और सहदेव तपेश्वर कलश किरतार। चारों युगोके जीवों का उध्दार किया। पाँच, सात, नौ, बार, तेत्तीस कोटि के मिलाप दिया। आप हरिवंश पात्र स्वामीजी भाव भक्ति सिध्द करें। थाल, प्रसाद, निशानी, आतिथ्य, दशांश, सुक्रित, दाम-दोकडा, पान, फूल, फल,

अन्न-जल। सब्जी, फसल, भक्ति, उपासना मान्य रखों, स्वामी आप पर बलिहारी जाऊं। देव हमको आपकी आश हैं। अक्षयपात्र अखूट कर दो। स्वामी आप गत-गंगा को उज्ज्वल कर दो। अन्नपूर्णा अन्न भरो। गणेशजी जल भरो। रिध्दि-सिध्दि प्रदान करो। माता भवानी, महादेव स्वामी भोजन परोसे, माता भवानी जार्ये ब्रह्माजी के पास। रिध्दि-सिध्दि प्रदान करो हम हे दास। हमारे भंडार भरपुर करो। सुखी बनो।

अन्नदेव पूर्ण जलंधर मुखी

सद्गुरु इमामशाह.... ॐ श्री निष्कलंकी नारायण नमो नमः।

★

## प्रसाद ( भोजन ) ग्रहण करने का मंत्र

ॐ परम कृपालु परमात्माकी कृपासे आरंभ करता हूँ।

ॐ नमो श्री सद्गुरु पात्र ब्रह्मा इन्द्र इमामशाह आद्यविष्णु निरंजन निष्कलंकी नारायण आपकी आशिष से....

स्वामी आप सृष्टि के सर्जनहार। थाल अतिथ्य अप भाव-सुभाव सें, आपके निमित्त से, आपके भोजनालयमें स्वीकार करों। अन्न-जल का आहार, पान-फूल के भोकता, सकल-संघ पर दयाकी दृष्टि रखो। आपका तेज प्रगट करो। सेवक के उपर दया की दृष्टि रखो। अनंत जीव तप करके आये। अैसा वेद देव लोग प्रस्तुत कर रहे है। सद्गुरुने स्नेह किया। वह चतुर वेदी ब्रह्मा। स्वामी! हक के दाने सेवामें लायें। जाका दाना, उद्यम करके प्राप्त किया। सच्चाइ से लाना। प्रेमसे पकाना! संन्यासी ग्रहण करें ब्रह्मार्पण करके ग्रहण करें। स्वामी! आपको अर्पण करें।

सद्गुरु इमामशाह...ॐ श्री निष्कलंकी नारायण नमो नमः।

★

# प्रसाद आरोगने के बाद का मंत्र

ॐ परम कृपालु परमात्माकी कृपासे प्रारंभ करता हूँ।

ॐ नमो श्री सद्गुरु पात्र ब्रह्मा इन्द्र इमामशाह आद्य विष्णु निरंजन निष्कलंकी नारायण आपकी आशिष से...

अेक गुणा दान। सहस्त्र गुणा पुण्य। अंत समय पर सेवककी रक्षा करना। विश्वास अखंड रखना। धर्म के मार्ग में रखना। स्वामी! सहाय करना। जो भंडार से रोजी मिले वह भंडार भरपूर करना। स्वामी! आपका प्रसाद, आपने दिया। सेवकने ग्रहण किया। प्रकाश हुआ। स्वामी आपको पहुंचाया।

सद्गुरु इमामशाह...
ॐ श्री निष्कलंकी नारायण नमो नम:

★

# चंद्र दर्शन का मंत्र

ॐ परम कृपालु परमात्माकी कृपासे प्रारंभ करता हूं। ॐ नमो: श्री सद्‌गुरु पात्र ब्रह्मा इन्द्र इमामशाह आद्य विष्णु निरंजन निष्कलंकी नारायण आपकी आशिष से....

दया, क्षमा, शांति के वरदाता। मैं हुं अरजदार उम्मिदवार आज है चंद्रमा। गुरुजी! आप सति जनोंके सत् रखना। हमारी बिनती ध्यानमें रखो। स्मरण कि गइ बात की सहायता करो। किये गये अपराध क्षमा करो। दुसरे अपराध मत करवाना। झांखा, मेघा, किन्नर, तेत्तीस कोटिका मिलन कराओं। अनंत कोटिके संगमें रखना। लक्ष्य चौर्यासीके फेरे मिटाना।

सद्‌गुरु इमामशाह...

ॐ श्री निष्कलंकी नारायणको नमो नमः

# सद्‌गुरुकी ( शिखवण ) शिक्षा

सद्‌गुरुजी की शिक्षा सच्ची,
सुणो ऋषिवर मन अेकांति। १
दिनभर करो सब अपना धंधा,
शाम हुअे बनो प्रभु का बंदा। २
किसीकी भी मत करना निंदा,
जाकर कहना मंदिरमें हे जंदा। ३
गुरु मुखे आप कहो रे बंदा,
ऋषिवर जनोकी यही है संध्या। ४
अैसी संध्या पूजो ऋषिवर भाई,
छोडकर क्रोध करना नही इर्षाई। ५
मन वशमें सो ममता मर जाई,
धर्मशालामें कभी सोना मत भाई। ६
धर्मशालामें दूजे की बात मत करना,
ज्यादा खा कर पेट मत भरना। ७
भरेंगे पेट तो प्रमादी बन जायेंगे,
आयेगी निंद तो फीर पस्तायेंगे। ८
कम खाने से सबकुछ मिलेगा,
जागृतिसे जीतकर सद्‌गुरु पावेगा। ९
बडे बुझुर्गकी मर्यादामें रहना,
अवगुण बडों का जरूर तुम सहना। १०
अच्छे दिनको बरस तुम समजना,
मीठे वचन बोलकर प्रेम जताना। ११

अपने से जो छोटा है भाई,
बडा समझकर कहो मेरे भाई। १२
मीठे वचन तुम बोलो मेरे भाई,
मुख पर झलकेंगे हीरे मेरे भाई। १३
सद्‌गुरु मिलन का यह है भेद,
ऋषिवरों के साथ न रखना खेद। १४
अच्छा सुनकर बुरा आचरना,
निश्चय ही भला कभी नही होगा। १५
निद्राधीन बन, प्रमादी मत बनना
वेद वचन है, जुठे मत बनना। १६
कुड कपट सब दिलसे निकालो,
अमीरस पीकर पूण्य कमालो। १७
जाकर घरसे धर्मशालामें आओ,
भाव-भक्ति से कुछ देकर जाओ। १८
श्रध्दा से जो मिले वही तुम लाओ,
पुजारी से मत बडपन दिखाओ। १९
बडपन करे जो सबको भायें,
दरिद्री बने और न प्रभुको पावें। २०
अधर्मी होकर बने लंपटी,
सच न देखे जुठके प्रचोरी, २१
सुतकी बनकर अपवित्र मत सहना,
पीडा, दुःख, विपत मत सहना। २२

अमीरस पाकर लेलो सुख प्राणी,
गुरुजी कभी नही त्यजेंगे भाई। २३
धर्मी लड़ना कभी नही जाने,
अधर्मी मनमें अच्छा नहीं माने। २४
ज्ञान-ध्यानमें शोच कर देखों,
हानी न होवे वही संभालो। २५
धरो ध्यान तुम करो स्वकरणी,
गुप्त ज्ञान धरी, करो सुकरणी। २६
चुस्त होकर गुण भर लेना,
ऋषिवर! ग्रहण करो सौ क्रिया। २७
प्रथम अंतर निर्मल कर लेना।
दुसरा है, स्नान करके खाना। २८
दिन रात सतमार्ग पर चलना।
निश्चय सत वचन तुं वदना। २९
दया रखना दिल में तु प्राणी।
दान दे सुपात्रको जाणी।। ३०
दुःख दुसरोंकां पहचान मेरे भाई।
बडे-बुजुर्गका सन्मान कर चाही। ३१
मतकर बढई-गर्व तुं मनसे।
क्रोध न करना आज्ञा हैं, दसवें।। ३२
धर्म करनेमें प्रमाद मत करना।
सर्जनहारका ध्यान ही धरना।। ३३

नित-नित भक्तजनोंको मिलना।
संत, ज्ञानी, प्रभु भक्तको पाना। ३४
निशदिन तिर्थ जल तुं पीना।
गर्व त्यज कर धर्मी तुं बनना।। ३५
ऋषिवर झुठ कभी मत बोलो।
अतिथि को अहरर्निश सत्कारो।। ३६
भुखेको अन्न सदा तुं देना।
प्यास प्यासे की बुझाते रहना। ३७
वस्त्रहीनको वस्त्र ही देना।
सब साथी का कष्ट मिटाना। ३८
सब सहकर ध्यान ही धरना,
अवगुण करने पर गुण ही करना।। ३९
कम किसीको देना नही।
बीना हकका लेना नही।। ४०
पर स्त्री मात समान है भाई।
बुरी नजर से मत देखो भाई।। ४१
जान-बुझ कर मत दो गवाही,
कपट कभी मत करना भाई।। ४२
मुखसे बुरा कभी मत कहना,
सुद का अन्न कभी मत खाना।। ४३
हाड मांस ग्रहण करना पातक,
पशु पोष कर बेचना नही जातक।। ४४

धरती है माता मूल्य मत करना,
पुत्रीका धन ग्रहण मत करना ॥ ४५
थोडीसी भी मत रिश्वत लेना,
गलत पत्र कभी मत लिखना ॥ ४६
जाकर शौचालय शुध्द होना,
क्रिया मानकर पवित्र बनना ॥ ४७
मिट्टी लेकर धोना हाथ,
स्नान करके बनना पाक ॥ ४८
पाणी लेकर पिशाब करना,
आचमन तीन सेवक तु करना ॥ ४९
शुध्द जल सदा तुं पीना,
जीव हत्या कभी मत करना ॥ ५०
हींग, तम्बाकु कभी न खाना,
चीज नशीली कभी न लेना ॥ ५१
बैठ नदी-तट खाना वहीं,
भोजन झुठा कभी करना नही ॥ ५२
निलके वस्त्र कभी पहनना नहीं,
निचकी सोबत करना नही ॥ ५३
व्रतोपवास करके आश न रखना,
पथ्थर जैसेकी स्तुति न करना ॥ ५४
अमानत असतकी कभी न रखना,
मिले अवसरको नहीं गवाना ॥ ५५

मोक्ष मार्गका जपना जाप,
बिना पूछे खाना है पाप।। ५६
थोडीसी भी घडी चूकना नहीं,
ज्यादा भोजन खाना नहीं।। ५७
प्रीत न करना लालच आश,
माता समान है बडी भौजाइ।। ५८
दुश्मनी किसीसे करना नही,
पडौशीको दुःख देना नहीं।। ५९
विश्वासघात बडा हैं पाप,
पडी चीज मत लेना भाई।। ६०
कलंकित किसी को करना नही,
कर्ज किसीका रखना नहीं।। ६१
धन पराया कभी मत लेना,
बनकर पुत्र पडेगा देना।। ६२
अपशब्द कभी बोलना नही।।
मूर्ख बनकर रहना नही ६३
ज्ञानी सब समदृष्टिसे देखो,
दुश्मन करें अैसा मत करो।। ६४
साच-झुठ का विवाद न करना,
जुआ-जुगारमें कभी न पडना। ६५
नाच-छंद भवाई मत देखो,
तुम करोगे तो गुरु खो देंगे।। ६६

भोजन की न करना बुराइ,
करो बखान न करो बुराइ॥ ६७
प्रात: स्नान करके निकलना,
दुनिया करें अैसा मत करना॥ ६८
तप तिर्थ और करना स्नान,
निर्मल होकर धरना ध्यान॥ ६९
अपने पशुको दु:ख न देना,
प्रित दिवानो से कभी न करना॥ ७०
चलते घुमते खाना नहीं,
बुरें दृश्य कभी देखना नही॥ ७१
लिखा वेदशास्त्रमें वही तुम करना,
शुध्द-बुध्दिसे हरदम रहना॥ ७२
विष खा कर कभी न मरना,
आवागमनके चक्करमें न पडना॥ ७३
जुस्सा जुबानी का बशमें रखना,
परस्त्रीका कभी संग न करना॥ ७४
जुठा पाणी अग्निमें मत दालों,
हरें वृक्ष कभी न काटों॥ ७५
प्रात:कालमे मत तोडो फुल,
पथ्थर पूजने से न मिलेगा मोक्ष॥ ७६
मूंगे प्राणीकी हत्या मत करना,
भोजन समय उठ-बैठ न करना॥ ७७

पशुको जुठन खिलाना नही,
इज्जत किसीकी खोलना नही॥ ७८
दुसरोंकी बातमें दखल न करना,
गुरु वचनको भुल न जाना॥ ७९
पूछे किसी तो अच्छी शीख देना,
माला लेकर हरि स्मरण ही करना॥ ८०
मिले ब्रह्माजी अमीरस पीओ,
पालन करो ऋषिवर सौ ही क्रिया॥ ८१
नये भक्तको देखकर धर्म देना,
सौ क्रियाकी जनेऊ पहनाना॥ ८२
बने बहमन ब्रह्माजी मिल गये,
आवागमनके फेरे मिट गये॥ ८३
सूनो ऋषिवर तूम यह ब्रह्मज्ञान,
करना गतमें गंगास्नान॥ ८४
ब्रह्मज्ञान सद्‌गुरुजीको भार्ये,
अडसठ तीरथ गुरु चरणमें आये॥ ८५
सद्‌गुरु जो सबमें बैठे,
ज्ञान-भाग्यसे सद्‌गुरु को देखे॥ ८६
ध्यान-ज्ञान शोचकर देखो,
सृष्टिमें है देव गुप्त अवतारी॥ ८७
ऋषिवर हो जो रखते ज्ञान,
निर्मल हो कर धरना ध्यान॥ ८८

वशमें है मुनिवरके मन,
करते कसोटी काया रतन ॥ ८९
पढे इमामशाह सुणो सब भाई,
साथ बैठ सब रखो जुगताइ ॥ ९०
आद्य सद्‌गुरु तपस्वी कहलाये,
वही तपस्वी जांबुद्विपर्मे आये ॥ ९१
देखो सद्‌गुरु जांबुद्विपमें आये,
गुरुजन मिलकर गुण जो गावें ॥ ९२
जांबुद्विपमें सद्‌गुरु बिराजे,
आश रखो तुम अमरापुर जाये ॥ ९३
ब्रह्मज्ञानसे वचन निभायें,
अेक ध्यानसे ऋषिवर भायें ॥ ९४
जिस रुपसे सद्‌गुरुजी होते,
वही रुपको जपते सब रहते ॥ ९५
झुककर करते रहो प्रणाम,
जांबुद्विपमें सद्‌गुरुका मुक्काम, ॥ ९६
पूर्ण प्रेमसे धर्म निभावो,
ऋषिवर तुम अमरापुर जाओ ॥ ९७
अमरापुरका अमरपद लाना,
ऋषिवर साथ अमरगढ रहना ॥ ९८
अमर फलका भोजन तुम करना,
अनंतकाल तक आयु तुम पाना ॥ ९९
सद्‌गुरु वचन अेकचितसे निभाना,
कहते इमामशाह अमरापुर तुम पाना ॥ १००

# जय जगदीश



ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे,
भक्तोजनोंके संकट क्षणमें दूर करे....ॐ जय...
जो ध्यावै फल पावै दुःख बिनसे मनका...प्रभु (२)
सुख संपत्ति घर आवे (२)
कष्ट मिटे तनका... ॐ जय..



माता-पिता तुम मेरे, शरण ग्रहूँ किसकी ? प्रभु (२)
तुम बिन और न दूजा (२)
आश करुँ किसकी... ॐ जय...
तुम पुरण परमात्मा, तुम अंतरयामी प्रभु (२)
परब्रह्म परमेश्वर (२) तुम सबके स्वामी....ॐ जय...
तुम करुणाके सागर, तुम पालनकर्ता, प्रभु (२)
मैं मूरख खल काभी कृपा करो भर्ता....ॐ जय...
तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति प्रभू (२)
किस बिध मिलूँ दयामय (२)
तुमको मै कुमति...ॐ जय...
दीन-बंधु, दुःख हर्ता, तुम प्रभू मेरे, प्रभु (२)
अपने हाथ बढाओ (२) द्वार पडा तेरे...ॐ जय...
विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा प्रभु (२)
श्रध्दा भक्ति बढाओ (२) संतनकी सेवा... ॐ जय..

हे दयाघन भगवन् ! मै तुझे नमस्कार करता हूँ। जन्ममरणरुप भयंकर भवसागरमें मै गोते खा रहा हूँ। हे भगवन् तू मेरा रक्षण कर। यह त्रिविध दुःखरुप भवसागर से बाहर पडना मेरे वशकी बात नही। तुही मेरा रक्षणहार बनकर मुझपर कृपा करो। हे भगवन् ! मुझपर अमृतदृष्टीका एक अमृत स्त्रोत बरसावो।

मनुष्य चाहे कौनसे भी ज्ञीतीका हो, कौनसेभी धर्मका हो, पंथका या राष्ट्रका नागरिक हो, जबतक अपनी श्रध्दा, उत्कट प्रेम ईश्वरपर कायम रहेगा, प्रार्थना की प्रभावसे अपना जीवन प्रसन्न, प्रगत और पवित्र होता रहेगा इसका प्रत्यय आता है। प्रार्थनाके प्रभावसे मानवी अंत:करण एक दिव्य ज्योती से उद्दिपित होता है। उसके प्रकाशसे मनुष्य आत्मदर्शनका लाभ प्राप्त कर लेता है। प्रार्थना यह परिस है इस परिसस्पर्शसेही तुम्हारा जीवन उन्नत बनेगा। अंत: दिनभर कमसेकम एक बार तो भी प्रार्थनाकी आवश्यकता है। प्रार्थनाकी प्रभावसे आत्मचिंतन बढना है। आत्मशोधन से आत्मविकास होता है और भक्त भगवंतरुप बनता है।

# हरिपूजनके फूल

सच बोलो हरिनाम लो,
तजो कपट व्यवहार ॥
सब प्रकार हिंसा तजो,
करो आतिथी सत्कार ॥१॥
प्रेम करो सबसे सदा,
सदा करो सत्संग ॥
दुखियोंकी सेवा करो,
कभी ना बदलो रंग ॥२॥
ब्रह्मचर्य पालन करो,
परधनको दो त्याग ॥
वस्तु परिग्रह मत करो,
हीय धरो वैराग ॥३॥
क्षमा करो अपराधीको,
दोष न देखो भूल ॥
हरिपूजाके अति सुखद है,
अे पंधरा फूल ॥४॥

ॐ

# शुभ संज्ञा

१) ॐकार परमवंदनीय है।
२) श्री इमामशाह महाराजकी वाणी अमर रहे।
३) फूलोसे भी प्यारा है सतपंथ हमारा है।
४) श्री सतपंथ धर्म अखंड रहो।
५) सफेद ( श्वेत ) ध्वजा लहराती रहे।
६) अखंड ज्योत जलती रहे।
७) आत्मा आत्मामें नारा है, निष्कलंकी नारायण हमारा है।
८) सतपंथी जन व्यसन मुक्त रहे।
९) सूर्यनारायणको नित्य नमस्कार करें।
१०) अेकताकी झंखना अतूट रहे।
११) सतपंथी जन नीडर बने।
१२) सुबह-शाम सतपंथी जन मंदिरमें आते रहें।
१३) सतपंथी सतपंथी भाई भाई।

श्री निष्कलंकी नारायण भगवानकी जय।
श्री सद्गुरु इमामशाह महाराजकी जय।
श्री सतपंथ सनातन धर्म की जय।
श्री करसनदासजी महाराज चिरायु हो।
श्री जगन्नाथजी महाराज चिरायु हो!
श्री अपने अपने गुरु महाराजकी जय।



( कोई भी धर्ममार्ग असमर्थ या निरोपयोगी नही है। )

ब्रह्मज्ञान और आत्म ज्ञान में ही सत्य और शुध्द नीती का समन्वय होता है। इस लिये शुध्द अंत:करण से आचरण करनेवाला सतपंथी कहलाता है।

आधारभूत ग्रंथो की शास्त्रोक्त विचारधारा से प्रवृत्त सतपंथ धर्म भी अथर्ववेद के सिध्दांतो पर चलनेवाला सनातन मार्ग है । जिसकी उपासना आत्मबोध देती है।

अखिल भारतीय संत संमेलन में उपस्थित सभी महापुरुषो, मठाधिकारीओं संतो और सन्माननीय महानुभावों का हम हार्दिक स्वागत करते हैं।